Bihar Assistant Professor Hindi Sample Paper

Q1. 'हिंदू मग पर पांव न राखेउ। का जौ बहुतै हिंदी भाखेउ' किसकी पंक्तियाँ हैं?
(a) कुतुबन
(b) अमीर खुसरो
(c) नूर मुहम्मद
(d) मंझन
Ans.(c)
Sol. सही उत्तर: (c) नूर मुहम्मद
• परिचय: नूर मुहम्मद सूफी काव्य परंपरा के अंतिम महत्वपूर्ण कवि माने जाते हैं। उन्होंने 'इन्द्रावती' और 'अनुराग बाँसुरी' जैसी रचनाएँ कीं।
• इन्फॉर्मेशन बूस्टर: इन पंक्तियों के माध्यम से कवि ने उन लोगों को उत्तर दिया है जो एक मुसलमान होकर हिंदी और हिंदू धर्म के प्रतीकों का प्रयोग करने पर उनकी आलोचना करते थे।
• अतिरिक्त ज्ञान: नूर मुहम्मद की भाषा में फारसी के शब्दों का प्रभाव सूफी प्रेमाख्यानों की तुलना में अधिक मिलता है।

Q2. 'एक और द्रोणाचार्य' में 'एकलव्य' के अंगूठे का आधुनिक संदर्भ क्या है?
(a) विद्यार्थी की शारीरिक अक्षमता।
(b) प्रतिभाशाली छात्र 'चंदू' की बलि जो व्यवस्था के दबाव में होती है।
(c) द्रोणाचार्य का महान त्याग।
(d) आधुनिक शिक्षा में गुरु-शिष्य परंपरा का अंत।
Ans.(b)
Sol. सही उत्तर: (b) प्रतिभाशाली छात्र 'चंदू' की बलि (मृत्यु) जो व्यवस्था के दबाव में होती है।
• Introduction: शंकर शेष का नाटक 'एक और द्रोणाचार्य' (1977) प्राचीन मिथक और आधुनिक शिक्षा व्यवस्था के समानांतर चलता है। नाटक यह सवाल उठाता है कि क्या आज का शिक्षक भी सत्ता के दबाव में आकर अपनी आत्मा और अपने शिष्यों के हितों की बलि नहीं दे रहा है? यह गुरु के अस्तित्वगत संकट का नाटक है।
• Information Booster: नाटक में 'अरविंद' आधुनिक द्रोणाचार्य है, जो अपने कॉलेज के भ्रष्ट प्रेसिडेंट के दबाव में एक ईमानदार छात्र 'चंदू' के साथ न्याय नहीं कर पाता। 'चंदू' वह आधुनिक एकलव्य है जिसे व्यवस्था आत्महत्या करने पर मजबूर कर देती है। उसका यह बलिदान ही आधुनिक समय में 'अंगूठे का दान' है, जहाँ प्रतिभाशाली छात्रों को राजनीति की भेंट चढ़ा दिया जाता है।
• Additional Knowledge: इस नाटक में दो कथाएँ साथ चलती हैं—एक महाभारत की द्रोणाचार्य कथा और दूसरी अरविंद की आधुनिक कथा। दोनों ही कथाओं में द्रोणाचार्य सत्ता (धृतराष्ट्र/प्रेसिडेंट) के प्रति अपनी निष्ठा के कारण अपराध बोध से ग्रस्त रहते हैं। यह नाटक मध्यवर्गीय बुद्धिजीवियों की कायरता और उनकी नैतिक पतन की कथा को बड़ी बेबाकी से कहता है।

Q3. 'तीसरी कसम' कहानी में हीरामन ने कौन सी तीन कसमें खाई थीं? (सही क्रम चुनें)
(a) चोरी का माल नहीं ढोना, बाँस नहीं ढोना, नौटंकी वाली को गाड़ी में नहीं बैठाना।
(b) बाँस नहीं ढोना, चोरी का माल नहीं ढोना, शराब नहीं पीना।
(c) नौटंकी वाली को नहीं बैठाना, बाँस नहीं ढोना, चोरी का माल नहीं ढोना।
(d) चोरी का माल नहीं ढोना, झूठ नहीं बोलना, बाँस नहीं ढोना।
Ans.(a)
Sol. सही उत्तर: (a) चोरी का माल नहीं ढोना, बाँस नहीं ढोना, नौटंकी वाली को गाड़ी में नहीं बैठाना।
• Introduction: फणीश्वरनाथ रेणु की 'तीसरी कसम' (उर्फ 'मारे गए गुलफाम') एक आंचलिक कहानी है। इसका नायक हीरामन एक भोला-भाला गाड़ीवान है। कहानी उसके जीवन के तीन कड़वे अनुभवों और उनसे ली गई प्रतिज्ञाओं के इर्द-गिर्द बुनी गई है।
• Information Booster: पहली कसम: पुलिस से पकड़े जाने के डर से उसने 'चोरी का माल' (कालाबाजारी का सामान) न ढोने की कसम खाई। दूसरी कसम: लदे हुए 'बाँस' से गाड़ी के एक्सीडेंट के बाद उसने बाँस न ढोने की कसम खाई। तीसरी कसम: हीराबाई (नौटंकी कलाकार) से प्रेम और उसके बिछोह के दर्द के बाद उसने 'नौटंकी वाली' को गाड़ी में न बैठाने की कसम खाई।
• Additional Knowledge: यह कहानी ग्रामीण अंचल की निश्छलता और एक अनकहे प्रेम की मार्मिक गाथा है। हीरामन के लिए हीराबाई केवल एक सवारी नहीं, बल्कि एक देवी जैसी थी। कहानी का अंत अत्यंत भावुक है जब हीरामन अपनी तीसरी कसम खाता है, जो वास्तव में उसके दिल के टूटने का प्रतीक है।

Adda247
GET IT ON Google Play

Q4. नाथ साहित्य के आविर्भाव के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. नाथ पंथ का उदय सिद्धों की वाममार्गी भोग-प्रधान योग साधना की प्रतिक्रिया के रूप में हुआ।
II. आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार, "गोरखनाथ ने पतंजलि के उच्च लक्ष्य ईश्वर प्राप्ति को लेकर हठयोग का प्रवर्तन किया।"
III. नाथों ने 'अंतःसाधना' पर बल दिया और बाह्य आडंबरों का खंडन किया।
सही कूट चुनिए:
(a) केवल I और II
(b) केवल II और III
(c) केवल I और III
(d) I, II और III सभी
Ans.(d)
Sol. सही उत्तर: (d) I, II और III सभी
• **परिचय:** नाथ साहित्य का विकास 9वीं से 14वीं शताब्दी के मध्य हुआ, जिसका मुख्य श्रेय गोरखनाथ को जाता है। यह आंदोलन बौद्ध सिद्धों में व्याप्त वाममार्गी विकृतियों और 'महासुखवाद' के नाम पर होने वाले भोग-विलास के विरोध में खड़ा हुआ। नाथों ने इंद्रिय निग्रह और चरित्र की शुद्धि पर विशेष बल दिया।
• **इन्फॉर्मेशन बूस्टर:** आचार्य शुक्ल के अनुसार, गोरखनाथ ने पतंजलि के योगशास्त्र को नया आधार दिया। उन्होंने शरीर की आंतरिक शुद्धि के लिए 'हठयोग' का मार्ग अपनाया। इसमें प्राणायाम और नाड़ी शोधन के माध्यम से कुंडलिनी जागृत करने का विधान है, जो ईश्वर प्राप्ति का साधन माना गया है।
• **अतिरिक्त ज्ञान:** नाथ साहित्य बाह्य कर्मकांडों, तीर्थाटन और मूर्तिपूजा का कड़ा विरोध करता है। उनके अनुसार, ईश्वर कहीं बाहर नहीं बल्कि मनुष्य के भीतर 'घट' में ही विद्यमान है। उनकी यह 'अंतःसाधना' आगे चलकर मध्यकालीन निर्गुण संत साहित्य (विशेषकर कबीर) की पृष्ठभूमि बनी।

Q5. सुमेलित कीजिए (प्रसिद्ध पंक्तियाँ एवं निबंध):

सूची-I (पंक्ति)	सूची-II (निबंध)
(A) "आचरण की सभ्यता का देश ही निराला है।"	(1) शिवशंभु के चिट्ठे
(B) "बुरे दिन आए हैं, इसी से सब कुछ देखना पड़ा।"	(2) मजदूरी और प्रेम
(C) "सौंदर्य वस्तुगत नहीं, ऐतिहासिक होता है।"	(3) मेरे राम का मुकुट भीग रहा है
(D) "चिंता की यह बदली और घनी हो गई।"	(4) संस्कृति और सौंदर्य

कूट:
(a) A-2, B-1, C-4, D-3
(b) A-1, B-2, C-3, D-4
(c) A-2, B-3, C-4, D-1
(d) A-4, B-1, C-2, D-3
Ans.(a)
Sol. सही उत्तर: (a) A-2, B-1, C-4, D-3
• परिचय: यह मिलान हिंदी साहित्य के उन प्रमुख निबंधों के केंद्रीय भावों को दर्शाता है जिन्होंने सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक चेतना को प्रभावित किया। सरदार पूर्ण सिंह, बालमुकुंद गुप्त, नामवर सिंह और विद्यानिवास मिश्र के निबंधों की ये पंक्तियाँ उनके मौलिक चिंतन का प्रतिनिधित्व करती हैं।
• इन्फॉर्मेशन बूस्टर: * आचरण की सभ्यता: सरदार पूर्ण सिंह का मानना है कि श्रेष्ठ आचरण किसी भाषा या सिद्धांत से नहीं, बल्कि जीवन की साधना से उपजा 'मौन' संगीत है।
• शिवशंभु के चिट्ठे: बालमुकुंद गुप्त ने लार्ड कर्जन को लिखे पत्रों में 'बुरा समय' शब्द का प्रयोग भारतीय जनता की बेबसी और अंग्रेजी हुकूमत के अत्याचार के लिए किया है।
• संस्कृति और सौंदर्य: नामवर सिंह हजारीप्रसाद द्विवेदी की दृष्टि को आगे बढ़ाते हुए सौंदर्य को इतिहास और संस्कृति की कसौटी पर कसते हैं।
• मेरे राम का मुकुट भीग रहा है: यह पंक्ति ममता और लोक-भय की उस सघनता को दर्शाती है जो परंपरा को आधुनिक संकट से जोड़ती है।
• अतिरिक्त ज्ञान: 'शिवशंभु के चिट्ठे' व्यंग्य विधा का उत्कृष्ट उदाहरण है, जबकि विद्यानिवास मिश्र के निबंधों में 'भ्रमरानंद' के नाम से संकलित पत्र ललित निबंधों की नई ऊँचाइयों को छूते हैं।

Adda247 GET IT ON Google Play

Q6. 'प्रेमचंद घर में' जीवनी के पात्रों और उनके संबंधों का सही मिलान कीजिए:

सूची-I (पात्र)	सूची-II (संबंध/विशेषता)
(A) शिवरानी देवी	(1) प्रेमचंद की पुत्री
(B) अमृतराय	(2) प्रेमचंद की दूसरी पत्नी और लेखिका
(C) कमला देवी	(3) प्रेमचंद के बड़े पुत्र
(D) श्रीपत राय	(4) प्रेमचंद के छोटे पुत्र (कलम का सिपाही के लेखक)

कूट:
(a) A-2, B-4, C-1, D-3
(b) A-2, B-3, C-1, D-4
(c) A-1, B-2, C-3, D-4
(d) A-2, B-4, C-3, D-1
Ans.(a)
Sol. सही उत्तर: (a)
व्याख्या:
● परिचय: यह जीवनी प्रेमचंद के निजी जीवन को करीब से देखने का अवसर देती है। इसे उनकी पत्नी शिवरानी देवी ने 1944 में लिखा था।
● इन्फॉर्मेशन बूस्टर: अमृतराय प्रेमचंद के छोटे बेटे थे जिन्होंने 'कलम का सिपाही' जीवनी लिखी। श्रीपत राय बड़े बेटे थे। कमला देवी उनकी पुत्री थीं।
● अतिरिक्त ज्ञान: शिवरानी देवी ने इसमें प्रेमचंद की आर्थिक तंगी, उनकी बीमारी और उनके स्वाभिमानी स्वभाव का बेबाक वर्णन किया है।

Q7. नागार्जुन की कविता 'अकाल और उसके बाद' के काव्य-क्रम को सही से पहचानिए:
I. दाने आए घर के अंदर कई दिनों के बाद
II. कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास
III. कौए ने खुजलाई पाँखें कई दिनों के बाद
IV. कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उनके पास
(a) I, II, III, IV
(b) II, IV, I, III
(c) IV, II, I, III
(d) II, I, IV, III
Ans.(b)
Sol. सही उत्तर: (b) II, IV, I, III
● परिचय: बाबा नागार्जुन की कविता 'अकाल और उसके बाद' मात्र आठ पंक्तियों की एक कालजयी लघु कविता है। यह कविता अकाल की विभीषिका और उसके बाद आने वाली खुशी के दो चित्रों (Four-line units) के माध्यम से मानवीय और मानवेतर संवेदनाओं को जोड़ती है। यह प्रगतिशील कविता का एक अनुपम उदाहरण है।
● इन्फॉर्मेशन बूस्टर: कविता का सही क्रम इस प्रकार है:
1. *"कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास"* (II)
2. *"कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उनके पास"* (IV)
3. *"दाने आए घर के अंदर कई दिनों के बाद"* (I)
4. *"कौए ने खुजलाई पाँखें कई दिनों के बाद"* (III)
● अतिरिक्त ज्ञान: प्रथम चार पंक्तियाँ अभाव, भूख और सन्नाटे का चित्रण करती हैं, जबकि अंतिम चार पंक्तियाँ जीवन की वापसी, भोजन की उपलब्धता और उल्लास को दिखाती हैं। 'चूल्हा' और 'चक्की' का रोना निर्जीव वस्तुओं के मानवीकरण द्वारा अकाल की गहराई को दर्शाता है।

Q8. 'ईदगाह' कहानी में हामिद के मित्र 'नूरे' ने कौन सा खिलौना खरीदा था?
(a) भिश्ती
(b) वकील
(c) सिपाही

(d) धोबिन
Ans.(b)
Sol. सही उत्तर: (b) वकील
• Introduction: प्रेमचंद की 'ईदगाह' बाल मनोविज्ञान पर आधारित एक कालजयी कहानी है। मेले में हामिद के मित्र अपनी-अपनी पसंद के खिलौने खरीदते हैं, जो उनके स्वभाव या तत्कालीन सामाजिक आकर्षण को दर्शाते हैं। नूरे ने दो पैसे में 'वकील' खरीदा था।
• Information Booster: नूरे को 'वकील' पसंद आया क्योंकि उसे लगा कि काला चोगा और हाथ में कानून की पोथी वाला यह खिलौना बहुत विद्वान और रोबदार है। अन्य मित्रों में मोहसिन ने 'भिश्ती', महमूद ने 'सिपाही' और सम्मी ने 'खंजरी' व 'धोबिन' खरीदी थी। हामिद इन खिलौनों के लालच को छोड़कर अपनी दादी के लिए चिमटा खरीदता है।
• Additional Knowledge: नूरे के वकील का अंत बहुत दुखद होता है—वह पटरे से गिरकर चकनाचूर हो जाता है। प्रेमचंद ने खिलौनों के टूटने के माध्यम से 'नश्वरता' और हामिद के चिमटे के माध्यम से 'उपयोगिता' और 'स्थायित्व' की जीत दिखाई है। यह कहानी त्याग और प्रौढ़ समझ का अद्भुत उदाहरण है।

Q9. 'ब्रह्मराक्षस' कविता में बावड़ी में बैठे पात्र का प्रतीकार्थ क्या है?
(a) सामंतवादी व्यवस्था का प्रतीक
(b) मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी का प्रतीक
(c) ग्रामीण कृषक का प्रतीक
(d) औपनिवेशिक शासक का प्रतीक
Ans.(b)
Sol. सही उत्तर: (b) मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी का प्रतीक
• परिचय: गजानन माधव 'मुक्तिबोध' की कविता 'ब्रह्मराक्षस' उनके काव्य संग्रह 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' में संकलित है। यह कविता एक फंतासी (Fantasy) के माध्यम से आधुनिक समाज के अंतर्विरोधों को प्रस्तुत करती है। इसमें बावड़ी के भीतर बैठा 'ब्रह्मराक्षस' वास्तव में उस आधुनिक बुद्धिजीवी का प्रतीक है जो असीमित ज्ञान और मेधा के बावजूद समाज से कटा हुआ है और अपने ही विचारों के द्वंद्व में फंसा हुआ है।
• इन्फॉर्मेशन बूस्टर: ब्रह्मराक्षस का पात्र एक ऐसी स्थिति को दर्शाता है जहाँ व्यक्ति अपनी बौद्धिक श्रेष्ठता के कारण आम जनता से दूर हो जाता है। वह 'अपूर्णता' का शिकार है। उसकी त्रासदी यह है कि उसके पास ज्ञान तो बहुत है, लेकिन वह उस ज्ञान का उपयोग सामाजिक परिवर्तन के लिए नहीं कर पा रहा है। वह बावड़ी की गहराई (अचेतन मन) में बैठा स्वयं को शुद्ध करने के व्यर्थ प्रयास में लगा रहता है।
• अतिरिक्त ज्ञान: मुक्तिबोध ने इस कविता में 'सजल-उर शिष्य' होने की इच्छा व्यक्त की है, जो यह दर्शाता है कि उस बुद्धिजीवी की अधूरी वैचारिक यात्रा को नई पीढ़ी द्वारा पूरा किया जाना आवश्यक है। यह कविता व्यक्ति और समाज के बीच टूटते संबंधों और बुद्धिजीवी वर्ग की विफलता पर एक गंभीर टिप्पणी है।

Q10. 'संस्कृति के चार अध्याय' में दिनकर ने 'हिंदू-मुस्लिम सांस्कृतिक समन्वय' का सबसे बड़ा प्रतीक किसे माना है?
(a) अमीर खुसरो और कबीर
(b) अकबर और दारा शिकोह
(c) मुगल वास्तुकला
(d) उपर्युक्त सभी
Ans.(d)
Sol. सही उत्तर: (d)
व्याख्या:
• परिचय: दिनकर ने तीसरे अध्याय में दिखाया है कि कैसे इस्लाम के प्रभाव से भारत में एक साझा संस्कृति (Composite Culture) विकसित हुई।
• इन्फॉर्मेशन बूस्टर: उन्होंने खुसरो की भाषा, कबीर की निर्गुण साधना और दारा शिकोह के उपनिषदों के अनुवाद को इस समन्वय का श्रेष्ठ उदाहरण माना है।
• अतिरिक्त ज्ञान: दिनकर के अनुसार सूफी मत और भक्ति आंदोलन ने दिलों को जोड़ने का काम किया।

Adda247
GET IT ON Google Play

Q11. सुमेलित कीजिए (कहानी एवं उसके गौण पात्र):

सूची-1 (कहानी)	सूची-2 (गौण पात्र)
(A) राजा निरबंसिया	(1) नत्थू
(B) कानों में कंगना	(2) चंदर
(C) उसने कहा था	(3) वजीरा सिंह
(D) ईदगाह	(4) मोहसिन

कूट (Options):
(a) (A)-4, (B)-3, (C)-2, (D)-1
(b) (A)-1, (B)-2, (C)-3, (D)-4
(c) (A)-3, (B)-4, (C)-1, (D)-2
(d) (A)-2, (B)-1, (C)-3, (D)-4

Ans.(d)

Sol. सही उत्तर: (d) (A)-2, (B)-1, (C)-3, (D)-4

• Introduction: कहानियों में मुख्य पात्रों के साथ-साथ गौण पात्र (Minor Characters) परिवेश को जीवंत बनाने और कथानक को गति देने में सहायक होते हैं। 'राजा निरबंसिया' में चंदर, 'कानों में कंगना' में नत्थू, 'उसने कहा था' में वजीरा सिंह और 'ईदगाह' में मोहसिन जैसे पात्र अपनी विशिष्ट भूमिका निभाते हैं।

• Information Booster: 'राजा निरबंसिया' (कमलेश्वर) में चंदर एक अस्पताल का कंपाउंडर है। 'कानों में कंगना' (राधिका रमण प्रसाद सिंह) में नत्थू एक नौकर है। 'उसने कहा था' में वजीरा सिंह विदूषक जैसा पात्र है जो सैनिकों का मनोरंजन करता है। 'ईदगाह' में मोहसिन हामिद का मित्र है जो भिश्ती वाला खिलौना खरीदता है।

• Additional Knowledge: वजीरा सिंह का "पलटन का विदूषक" होना युद्ध की भयावहता के बीच मानवीय राहत का प्रतीक है। वहीं मोहसिन का चरित्र बच्चों की स्वाभाविक ईर्ष्या और मासूमियत को दर्शाता है। गौण पात्रों की सही पहचान कहानी की गहरी समझ के लिए अनिवार्य है।

Q12. अभिकथन (A): 'बाणभट्ट की आत्मकथा' में बाणभट्ट का प्रेम वासनाजन्य न होकर उदात्त और आध्यात्मिक है। तर्क (R): बाणभट्ट 'भट्टिनी' को एक देवी के रूप में देखता है और उसके उद्धार को ही अपने जीवन का चरम लक्ष्य मानता है।
(a) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) और (R) दोनों सही हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) (A) सही है, लेकिन (R) गलत है।
(d) (A) गलत है, लेकिन (R) सही है।

Ans.(a)

Sol. सही उत्तर: (a) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।

• Introduction: आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी कृत 'बाणभट्ट की आत्मकथा' (1946) एक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि वाला दार्शनिक उपन्यास है। इसमें हर्षकालीन समाज और संस्कृति का जीवंत चित्रण है। उपन्यास का केंद्र बिंदु बाणभट्ट का लोक-कल्याणकारी और निस्वार्थ प्रेम है।

• Information Booster: बाणभट्ट का प्रेम शारीरिक आकर्षण से ऊपर उठकर श्रद्धा और सम्मान पर टिका है। वह 'भट्टिनी' (राजपुत्री) को अपवित्रता से बचाने और उसे मान-मर्यादा दिलाने के लिए अपना जीवन समर्पित कर देता है। तर्क (R) अभिकथन की सटीक व्याख्या करता है क्योंकि बाणभट्ट के लिए नारी 'मृणाल तंतु' के समान कोमल और पूजनीय है, भोग की वस्तु नहीं।

• Additional Knowledge: द्विवेदी जी ने इस उपन्यास के माध्यम से 'नारी देह' के प्रति सम्मान और उसके उद्धार के महान लक्ष्य को प्रतिपादित किया है। बाणभट्ट का यह कथन अत्यंत प्रसिद्ध है— "स्त्री शरीर देवमंदिर के समान पवित्र है।" यह उपन्यास भारतीय संस्कृति की गरिमा को पुनर्जीवित करने का एक सफल प्रयास है।

Q13. 'मैला आँचल' (फणीश्वरनाथ रेणु) के पात्रों और उनके संबंधों के विषय में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए: I. डॉ. प्रशांत 'मेरीगंज' गाँव में मलेरिया और कालाजार पर रिसर्च करने आता है।
II. कमली, तहसीलदार विश्वनाथ प्रसाद की पुत्री है जो अंततः डॉ. प्रशांत की जीवनसंगिनी बनती है।
III. बावनदास गाँव का एक दार्शनिक और सच्चा गांधीवादी पात्र है जिसकी मृत्यु नदी में डूबने से होती है।
IV. कालीचरण गाँव के युवाओं का नेतृत्व करता है और समाजवादी विचारधारा से प्रभावित है।
(a) I, II और IV
(b) II, III और IV
(c) I, III और IV

(d) केवल I और II
Ans.(a)
Sol. सही उत्तर: (a) I, II और IV
• Introduction: 'मैला आँचल' (1954) हिंदी का सर्वश्रेष्ठ आंचलिक उपन्यास है। यह पूर्णिया जिले के 'मेरीगंज' गाँव की कहानी है, जहाँ राजनीति, जातिवाद, प्रेम और अंधविश्वास का मिला-जुला रूप दिखता है।
• Information Booster: कथन I सही है; डॉ. प्रशांत एक आदर्शवादी डॉक्टर है जो जनसेवा के लिए पिछड़े गाँव आता है। कथन II सही है; कमली और प्रशांत का प्रेम उपन्यास का एक सुकुमार पक्ष है। कथन IV सही है; कालीचरण नई पीढ़ी के जोश और राजनीतिक चेतना का प्रतीक है। कथन III गलत है क्योंकि बावनदास (जो गांधीवाद का प्रतीक है) की मृत्यु भारत-पाकिस्तान सीमा पर स्मगलिंग रोकते समय 'गाड़ी के नीचे कुचलने' से होती है, न कि नदी में डूबने से।
• Additional Knowledge: बावनदास की मृत्यु उपन्यास का सबसे दुखद क्षण है, जो आजादी के बाद गांधीवादी मूल्यों की हत्या का प्रतीक है। 'मैला आँचल' की भाषा में अंचल की सोंधी महक और वहां के लोकगीत रचे-बसे हैं। यह उपन्यास भारतीय ग्रामीण जीवन का एक महाकाव्यात्मक चित्र प्रस्तुत करता है।

Q14. 'भारत दुर्दशा' में 'भारत' नामक पात्र की मूर्च्छा को दूर करने का प्रयास कौन करता है?
(a) भारत-दुर्दैव
(b) भारत-भाग्य
(c) आशा
(d) मदिरा
Ans.(b)
Sol. सही उत्तर: (b) भारत-भाग्य
• Introduction: भारतेंदु हरिश्चंद्र का नाटक 'भारत दुर्दशा' (1880) हिंदी का पहला राजनीतिक नाटक माना जाता है। इसमें देश की जर्जर स्थिति को विभिन्न प्रतीकात्मक पात्रों के माध्यम से दिखाया गया है। 'भारत' पात्र स्वयं देश का प्रतीक है, जो विपत्तियों के कारण मूर्छित होकर गिर पड़ता है।
• Information Booster: नाटक के अंतिम अंक में 'भारत-भाग्य' नामक पात्र आता है, जो भारत के गौरवशाली अतीत की याद दिलाकर उसे जगाने का असफल प्रयास करता है। जब वह देखता है कि उसका प्रयास विफल रहा है और 'भारत' नहीं जाग रहा, तो वह अत्यधिक ग्लानि में डूबकर आत्महत्या कर लेता है। यह दृश्य अत्यंत कारुणिक है और भारतीयों की सोई हुई चेतना पर प्रहार करता है।
• Additional Knowledge: इस नाटक में 'भारत-दुर्दैव', 'मदिरा', 'आलस्य' और 'अंधकार' जैसे पात्र देश के पतन के कारणों को दर्शाते हैं। भारतेंदु ने इस प्रहसननुमा नाटक के माध्यम से देशवासियों को अपनी दुर्दशा पर आंसू बहाने और फिर उठ खड़े होने का संदेश दिया है। "रोअहु सब मिलिकै आवहु भारत भाई" इसका प्रसिद्ध प्रारंभिक गायन है।

Q15. 'अंधायुग' नाटक के 'अन्तराल' का शीर्षक क्या है?
(a) पंख, पहिये और पट्टियाँ
(b) पशु का उदय
(c) गांधारी का शाप
(d) एक क्रमिक आत्महत्या
Ans.(a)
Sol. सही उत्तर: (a) पंख, पहिये और पट्टियाँ
• Introduction: डॉ. धर्मवीर भारती का गीति-नाट्य 'अंधा युग' पांच अंकों में विभाजित है, जिसके बीच में एक 'अंतराल' रखा गया है। यह अंतराल नाटक की कथा के प्रवाह को एक दार्शनिक मोड़ देता है। इसका शीर्षक 'पंख, पहिये और पट्टियाँ' अत्यंत प्रतीकात्मक है, जो युद्ध की अंधी गति और नियति को दर्शाता है।
• Information Booster: इस अंतराल में अश्वत्थामा और अन्य पात्रों की मानसिक कुंठाओं और युद्धोत्तर विसंगतियों को दिखाया गया है। 'पंख' कल्पना या उड़ने की चाहत का, 'पहिये' कालचक्र या प्रगति की विवशता का और 'पट्टियाँ' उस अंधता या सीमाओं का प्रतीक हैं जिनमें पात्र कैद हैं। यह भाग नाटक के मुख्य कथानक को गहराई प्रदान करता है।
• Additional Knowledge: 'अंधा युग' के अन्य अंकों के नाम क्रमशः हैं: 1. कौरव नगरी, 2. पशु का उदय, 3. अश्वत्थामा का अर्धसत्य, (अंतराल), 4. गांधारी का शाप, और 5. विजय: एक क्रमिक आत्महत्या। समापन 'प्रभु की मृत्यु' शीर्षक से होता है। यह नाटक द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद की वैश्विक हताशा को महाभारत के मिथक के माध्यम से प्रस्तुत करने वाला महान ग्रंथ है।

Q16. सही कालक्रम के अनुसार व्यवस्थित करें (निबंधों का प्रकाशन/रचना वर्ष):
(a) शिवशंभु के चिट्ठे, कविता क्या है, संस्कृति और सौंदर्य, उत्तराफाल्गुनी के आस-पास।
(b) कविता क्या है, शिवशंभु के चिट्ठे, उत्तराफाल्गुनी के आस-पास, संस्कृति और सौंदर्य।
(c) शिवशंभु के चिट्ठे, उत्तराफाल्गुनी के आस-पास, कविता क्या है, संस्कृति और सौंदर्य।
(d) संस्कृति और सौंदर्य, शिवशंभु के चिट्ठे, कविता क्या है, उत्तराफाल्गुनी के आस-पास।
Ans.(a)
Sol. सही उत्तर: (a) शिवशंभु के चिट्ठे, कविता क्या है, संस्कृति और सौंदर्य, उत्तराफाल्गुनी के आस-पास।
• Introduction: हिंदी निबंध साहित्य के विकास को इन चार महत्वपूर्ण रचनाओं के माध्यम से समझा जा सकता है। इनका सही क्रम है: बालमुकुंद गुप्त के 'शिवशंभु के चिट्ठे' (1904-05), रामचंद्र शुक्ल का 'कविता क्या है' (मूलतः 1909), नामवर सिंह का 'संस्कृति और सौंदर्य' (1982) और कुबेरनाथ राय का 'उत्तराफाल्गुनी के आस-पास' (1973-74 के दौरान संकलित)।
• Information Booster: 'शिवशंभु के चिट्ठे' लॉर्ड कर्जन की नीतियों पर करारा व्यंग्य है। 'कविता क्या है' निबंध हिंदी आलोचना का प्रस्थान बिंदु माना जाता है। नामवर सिंह का निबंध हजारीप्रसाद द्विवेदी के बहाने भारतीय संस्कृति के सौंदर्यशास्त्रीय पक्ष को उजागर करता है। कुबेरनाथ राय का ललित निबंध वृद्धावस्था और जीवन के 'उतरते' काल की दार्शनिक व्याख्या करता है।
• Additional Knowledge: यह अनुक्रम हिंदी निबंध की विकास यात्रा को दर्शाता है। जहाँ 'चिट्ठे' राजनीतिक चेतना का प्रतीक है, वहीं शुक्ल जी का निबंध सैद्धांतिक आलोचना का आधार है। नामवर सिंह और कुबेरनाथ राय के निबंध आधुनिक काल की सूक्ष्म वैचारिक और ललित गद्य शैली का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन रचनाओं ने हिंदी भाषा की सामर्थ्य को नई ऊंचाइयों पर पहुँचाया है।

Q17. 'मानस का हंस' (अमृतलाल नागर) के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(a) यह सूरदास के जीवन पर आधारित जीवनीपरक उपन्यास है।
(b) इसमें तुलसीदास के अंतर्द्वंद्व और 'राम' के प्रति उनके समर्पण को चित्रित किया गया है।
(c) रत्नावली, तुलसीदास की शिष्या के रूप में चित्रित है।
(d) उपन्यास का समापन तुलसीदास की काशी यात्रा के साथ होता है।
Ans.(b)
Sol. सही उत्तर: (b) इसमें तुलसीदास के अंतर्द्वंद्व और 'राम' के प्रति उनके समर्पण को चित्रित किया गया है।
• Introduction: अमृतलाल नागर द्वारा लिखित 'मानस का हंस' (1972) गोस्वामी तुलसीदास के जीवन पर आधारित एक उत्कृष्ट जीवनीपरक उपन्यास है। नागर जी ने इसमें तुलसीदास को एक 'देवता' के रूप में नहीं, बल्कि हाड़-मांस के एक संघर्षशील मनुष्य के रूप में चित्रित किया है।
• Information Booster: विकल्प (b) सही है क्योंकि यह उपन्यास तुलसीदास के बचपन के संघर्ष, उनकी काम-शक्ति से राम-भक्ति तक की यात्रा और उनके मानसिक द्वंद्वों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करता है। विकल्प (a) गलत है क्योंकि सूरदास पर आधारित उनका उपन्यास 'खंजन नयन' है। रत्नावली उनकी पत्नी थीं जिनके वचनों ने उन्हें भक्ति मार्ग पर मोड़ा।
• Additional Knowledge: नागर जी ने इस उपन्यास के माध्यम से मध्यकालीन भारत के सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश को फिर से रचा है। तुलसीदास का जीवन यह दिखाता है कि कैसे एक साधारण मनुष्य अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति और अटूट भक्ति से लोकनायक बन सकता है। यह उपन्यास शोध और कल्पना का एक अद्भुत समन्वय है।

Q18. 'गोदान' में आधुनिकता का सबसे सशक्त संकेत कौन-सा है?
(a) ग्रामीण जीवन
(b) पूँजीवादी शोषण
(c) स्त्री चेतना
(d) धार्मिक संघर्ष
Ans.(c)
Sol. सही उत्तर: (c) स्त्री चेतना
• परिचय: प्रेमचंद का 'गोदान' (1936) केवल किसान की त्रासदी नहीं है, बल्कि यह बदलते हुए भारतीय समाज का दस्तावेज है। इसमें आधुनिकता का प्रवेश पात्रों के विचारों के माध्यम से दिखाया गया है।
• इन्फॉर्मेशन बूस्टर: उपन्यास में 'मिस मालती' और 'गोबर की पत्नी झुनिया' के माध्यम से स्त्री के स्वतंत्र अस्तित्व और उसके अधिकारों की बात की गई है। मालती का पात्र पश्चिमी आधुनिकता और सेवा भाव के मेल को दर्शाता है, जो उस समय के लिए एक क्रांतिकारी संकेत था।
• अतिरिक्त ज्ञान: आधुनिकता का एक अन्य पहलू 'शहरी और ग्रामीण जीवन का द्वंद्व' भी है, जहाँ राय साहब और खन्ना जैसे पात्र पूँजीवादी प्रवृत्तियों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

Adda247
GET IT ON Google Play

Q19. 'मेरी तिब्बत यात्रा' (राहुल सांकृत्यायन) में लेखक ने किस स्थान को 'विद्या का केंद्र' बताया है, जहाँ उन्होंने दुर्लभ पांडुलिपियों की खोज की?
(a) ल्हासा
(b) शालु विहार
(c) साक्य विहार
(d) थोलिंग
Ans.(c)
Sol. सही उत्तर: (c) व्याख्या:
• परिचय: राहुल सांकृत्यायन हिंदी के 'महापंडित' और घुमक्कड़ शास्त्र के प्रणेता हैं। 1929-30 की उनकी तिब्बत यात्रा ऐतिहासिक महत्व की है।
• इन्फॉर्मेशन बूस्टर: 'साक्य विहार' में उन्हें संस्कृत की अनेक प्राचीन पांडुलिपियाँ मिलीं, जिन्हें वे खच्चरों पर लादकर भारत लाए थे।
• अतिरिक्त ज्ञान: उन्होंने यह यात्रा छद्म नाम 'भिक्षु धर्मकीर्ति' के रूप में की थी।

Q20. साधारणीकरण की निम्नलिखित स्थापनाओं को उसके प्रतिपादकों से सुमेलित कीजिए:

स्थापना	प्रतिपादक
A. रसास्वाद में वासनात्मक तथा स्थिर मनोवृत्तियाँ... साधारणीकरण के द्वारा आनंदमय बना दी जाती हैं...	(1) रामचंद्र शुक्ल
B. काव्य प्रसंग या रस के समस्त अवयवों का साधारणीकरण मानने की अपेक्षा कवि भावना का साधारणीकरण मानना...	(2) अज्ञेय
C. लोक हृदय की यह सामान्य अंतर्भूमि परख कर हमारे यहाँ साधारणीकरण सिद्धांत की प्रतिष्ठा की गई है...	(3) जयशंकर प्रसाद
D. जब चमत्कारिक अर्थ मर जाता है तब उस शब्द की रागोतेजक शक्ति भी क्षीण हो जाती है...	(4) डॉ. नगेंद्र
	(5) गुलाबराय

विकल्प (Options):
(a) A-1, B-2, C-3, D-4
(b) A-4, B-2, C-1, D-3
(c) A-5, B-2, C-3, D-1
(d) A-4, B-2, C-3, D-1
Ans.(b)
Sol. सही उत्तर: (b) A-4, B-2, C-1, D-3
• Introduction: साधारणीकरण भारतीय काव्यशास्त्र का एक केंद्रीय सिद्धांत है, जिसका अर्थ है किसी विशिष्ट अनुभूति का सार्वभौमिक या सामान्य हो जाना। भट्ट नायक से शुरू हुए इस विमर्श को आधुनिक आलोचकों—शुक्ल, नगेंद्र, प्रसाद और अज्ञेय—ने नए मनोवैज्ञानिक और दार्शनिक आयाम प्रदान किए हैं।
• Information Booster: आचार्य रामचंद्र शुक्ल साधारणीकरण को 'आलंबनत्व धर्म' का साधारणीकरण मानते हैं, जिससे पाठक 'लोक हृदय' की सामान्य भूमि पर पहुँचता है। डॉ. नगेंद्र ने इसे 'कवि की अनुभूति' का साधारणीकरण कहा है। जयशंकर प्रसाद इसे 'काव्य की संकल्पनात्मक अनुभूति' के संदर्भ में देखते हैं, जहाँ रागात्मक संबंध पुनः स्थापित होता है। अज्ञेय इसे मनोविज्ञान के अधिक निकट मानते हैं।
• Additional Knowledge: साधारणीकरण वह प्रक्रिया है जिसके कारण दर्शक पर्दे पर रोते हुए नायक को देखकर दुखी होने के बजाय 'करुण रस' का आनंद लेता है। आधुनिक काल में इस सिद्धांत की व्याख्या सामाजिक यथार्थ और व्यक्तिगत चेतना के धरातल पर की गई। शुक्ल जी का 'लोक हृदय' वाला सिद्धांत काव्य को समाज से जोड़ता है, जबकि नगेंद्र का विचार व्यक्तिपरक सौंदर्यशास्त्र पर बल देता है।

Q21. "वाक्यं रसात्मकं काव्यम्" यह उक्ति किस आचार्य की है?
(a) भोजराज
(b) विश्वनाथ
(c) जगन्नाथ
(d) मम्मट
Ans.(b)
Sol. सही उत्तर: (b) विश्वनाथ
• परिचय: आचार्य विश्वनाथ ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ 'साहित्य दर्पण' में काव्य की परिभाषा देते हुए कहा कि "रसयुक्त वाक्य ही काव्य है।"

Adda247
GET IT ON Google Play

• इन्फॉर्मेशन बूस्टर: आचार्य जगन्नाथ का काव्य लक्षण "रमणीयार्थ प्रतिपादक: शब्द: काव्यम्" है, जबकि मम्मट ने 'काव्यप्रकाश' में काव्य के दोष रहित होने पर बल दिया है।
• अतिरिक्त ज्ञान: विश्वनाथ रस को काव्य की आत्मा मानने वाले ध्वनिविरोधी और रसवादी आचार्य थे।

Q22. निम्नलिखित आचार्यों का सही कालक्रम चुनिए:
(a) रुय्यक, कुंतक, आनंदवर्धन, दंडी
(b) कुंतक, आनंदवर्धन, रुय्यक, दंडी
(c) आनंदवर्धन, दंडी, रुय्यक, कुंतक
(d) दंडी, आनंदवर्धन, कुंतक, रुय्यक
Ans.(d)
Sol. सही उत्तर: (d) दंडी, आनंदवर्धन, कुंतक, रुय्यक
• Introduction: भारतीय काव्यशास्त्र का इतिहास विभिन्न आचार्यों के योगदान से समृद्ध है। कालक्रम की दृष्टि से इनका सही क्रम दंडी (7वीं शताब्दी), आनंदवर्धन (9वीं शताब्दी), कुंतक (10वीं-11वीं शताब्दी) और रुय्यक (12वीं शताब्दी) है। इन आचार्यों ने काव्य के विभिन्न अंगों जैसे अलंकार, ध्वनि, वक्रोक्ति और अलंकारों के वर्गीकरण पर मौलिक सिद्धांत प्रस्तुत किए।
• Information Booster: आचार्य दंडी अलंकार संप्रदाय के प्रमुख आचार्य हैं जिन्होंने 'काव्यादर्श' लिखा। आनंदवर्धन ने 'ध्वन्यालोक' के माध्यम से ध्वनि संप्रदाय की स्थापना की। कुंतक ने 'वक्रोक्तिजीवितम्' लिखकर वक्रोक्ति को काव्य की आत्मा घोषित किया। रुय्यक ने 'अलंकारसर्वस्व' नामक ग्रंथ लिखकर अलंकारों का सूक्ष्म विश्लेषण और वर्गीकरण प्रस्तुत किया, जो बाद के आचार्यों के लिए मार्गदर्शक बना।
• Additional Knowledge: कालक्रम के इस अध्ययन से पता चलता है कि काव्य की आत्मा की खोज कैसे 'बाहरी सजावट' (अलंकार) से शुरू होकर 'आंतरिक व्यंजना' (ध्वनि) और फिर 'उक्ति वैचित्र्य' (वक्रोक्ति) तक पहुँची। दंडी के समय अलंकार प्रधान थे, लेकिन आनंदवर्धन के उदय ने काव्यशास्त्र में एक क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया, जिससे रस और ध्वनि के समन्वय को सर्वोच्च स्थान प्राप्त हुआ।

Q23.निम्नलिखित ग्रंथों का सही कालक्रम है:
(a) एस्थेटिक, लिटरेरिया बायोग्राफिया, द सैक्रेड वुड, पोयटिक्स
(b) पोयटिक्स, लिटरेरिया बायोग्राफिया, एस्थेटिक, द सैक्रेड वुड
(c) लिटरेरिया बायोग्राफिया, एस्थेटिक, द सैक्रेड वुड, पोयटिक्स
(d) द सैक्रेड वुड, पोयटिक्स, लिटरेरिया बायोग्राफिया, एस्थेटिक
Ans.(b)
Sol. सही उत्तर: (b) पोयटिक्स, लिटरेरिया बायोग्राफिया, एस्थेटिक, द सैक्रेड वुड
• Introduction: पाश्चात्य काव्यशास्त्र के इन महत्वपूर्ण ग्रंथों का कालक्रम दर्शन और आलोचना की विकास यात्रा को दर्शाता है। अरस्तू का 'पोयटिक्स' (ईसा पूर्व चौथी शताब्दी) प्राचीनतम है। कॉलरिज का 'लिटरेरिया बायोग्राफिया' (1817) रोमांटिकतावाद का प्रतिनिधि है। क्रोचे का 'एस्थेटिक' (1902) सौंदर्यशास्त्र पर केंद्रित है और टी.एस. इलियट का 'द सैक्रेड वुड' (1920) आधुनिक आलोचना का स्तंभ है।
• Information Booster: 'पोयटिक्स' में अरस्तू ने अनुकरण और विरेचन के सिद्धांत दिए। 'लिटरेरिया बायोग्राफिया' में कॉलरिज ने कल्पना (Fancy vs Imagination) का सूक्ष्म विवेचन किया। क्रोचे ने 'एस्थेटिक' में 'अभिव्यंजनावाद' (Expressionism) का प्रवर्तन किया। 'द सैक्रेड वुड' में इलियट ने 'परंपरा' और 'वैयक्तिक प्रज्ञा' (Tradition and Individual Talent) के अंतर्संबंधों की व्याख्या की।
• Additional Knowledge: यह क्रम हमें बताता है कि कैसे काव्य चिंतन 'वस्तुनिष्ठ अनुकरण' से शुरू होकर 'कल्पना की उड़ान' तक पहुँचा और फिर 'अभिव्यक्ति की कला' से होता हुआ 'परंपरा और नवीनता' के समन्वय तक आया। इन ग्रंथों ने न केवल यूरोपीय साहित्य को प्रभावित किया, बल्कि भारतीय आचार्यों (जैसे रामचंद्र शुक्ल और नगेंद्र) को भी तुलनात्मक आलोचना के नए सूत्र प्रदान किए।

Q24.स्थापना (Assertion-A): अवधी 'उकार बहुला' बोली है।
तर्क (Reason-R): क्योंकि इसमें 'घोड़ा' को 'घोरवा' और 'बेटा' को 'बेटवा' कहने की प्रवृत्ति पाई जाती है, जो इसके विशिष्ट व्याकरणिक ढांचे को दर्शाती है।
विकल्प (Options):
(a) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) और (R) दोनों सही हैं परन्तु (R), (A) की व्याख्या नहीं है।
(c) (A) सही है लेकिन (R) गलत है।
(d) (A) गलत है लेकिन (R) सही है।

Ans.(a)
Sol. सही उत्तर: (a) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
विस्तृत व्याख्या:
• प्रस्तावना: बोलियों की भाषाई विशेषताएं (जैसे ओकार-बहुला, आकार-बहुला, इकार-बहुला) नेट परीक्षा में वर्णनात्मक रूप में पूछी जाती हैं।
• नॉलेज बूस्टर: अवधी (पूर्वी हिंदी) में शब्दों के अंत में 'उ' स्वर की प्रधानता या 'व' प्रत्यय जोड़कर 'उ' की ध्वनि पैदा करने की प्रवृत्ति होती है। ब्रजभाषा 'ओकार बहुला' (जैसे- गयौ, खायौ) है, जबकि खड़ी बोली 'आकार बहुला' (जैसे- गया, खाया) है। तर्क (R) सही उदाहरण प्रस्तुत करता है।
• अतिरिक्त जानकारी: अवधी में 'ल' के स्थान पर 'र' (जैसे- फल के लिए फर) के प्रयोग की भी बहुत अधिक प्रधानता है।

Q25. निम्न में से किसने देवनागरी लिपि को "ध्वन्यात्मक दृष्टि से वैज्ञानिक" मानते हुए उसमें सुधार की वकालत की?
(a) महात्मा गांधी — उन्होंने लिपि को सांस्कृतिक उत्तराधिकार कहा।
(b) राहुल सांकृत्यायन — उन्होंने लिपि को वैज्ञानिकता की कसौटी पर खरा बताया।
(c) प्रेमचंद — उन्होंने देवनागरी की तुलना फारसी लिपि से की।
(d) रामधारी सिंह दिनकर — उन्होंने देवनागरी में काव्यात्मक सुंदरता देखी।
Ans.(b)
Sol. निम्न में से देवनागरी लिपि को "ध्वन्यात्मक दृष्टि से वैज्ञानिक" मानते हुए उसमें सुधार की वकालत की-राहुल सांकृत्यायन — उन्होंने लिपि को वैज्ञानिकता की कसौटी पर खरा बताया। राहुल सांकृत्यायन - उन्होंने देवनागरी लिपि को "ध्वन्यात्मक दृष्टि से वैज्ञानिक" माना। उन्होंने इस लिपि को तार्किक, स्पष्ट और भाषिक ध्वनियों के अनुरूप बताते हुए सुधार की आवश्यकता भी जताई थी, जैसे — संयुक्ताक्षरों का सरलीकरण उच्चारणानुसार लेखन संकेतों व विराम चिह्नों की मान्यता विकल्पों का विश्लेषण: (a) महात्मा गांधी - उन्होंने देवनागरी लिपि को भारतीय संस्कृति का उत्तराधिकारी अवश्य माना, परंतु उसे ध्वन्यात्मक वैज्ञानिक लिपि कहकर सुधार की विशेष वकालत नहीं की। (c) प्रेमचंद- उन्होंने भाषिक विषयों पर विचार ज़रूर किए, लेकिन देवनागरी बनाम फारसी लिपि की तुलना लिपि सुधार के संदर्भ में नहीं, भाषा नीति के संदर्भ में की थी। (d) रामधारी सिंह दिनकर - वे देवनागरी की काव्यात्मकता व सौंदर्य के पक्ष में थे, परन्तु उन्होंने इसे वैज्ञानिक दृष्टि से विश्लेषित नहीं किया।

Q26. संविधान के अनुच्छेद 350 (क) में किसका उल्लेख हुआ है?
(a) राज भाषा आयोग का गठन
(b) हिंदी की व्यापकता हेतु राजकीय प्रयत्न
(c) एक विशेष पदाधिकारी की नियुक्ति
(d) प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा की सुविधाएँ
Ans.(d)
Sol. सही उत्तर: (d) प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा की सुविधाएँ
• परिचय: भारतीय संविधान के भाग 17 में राजभाषा संबंधी प्रावधान हैं। अनुच्छेद 350 (क) भाषाई अल्पसंख्यक वर्गों के हितों की रक्षा करता है।
• इन्फॉर्मेशन बूस्टर: इस अनुच्छेद के अनुसार, प्रत्येक राज्य यह प्रयास करेगा कि भाषाई अल्पसंख्यक समूहों के बच्चों को शिक्षा के प्राथमिक स्तर पर उनकी 'मातृभाषा' में शिक्षा दी जाए।
• अतिरिक्त ज्ञान: अनुच्छेद 351 हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार और विकास के लिए केंद्र सरकार के कर्तव्यों का उल्लेख करता है।

Q27. संज्ञा अथवा सर्वनाम के जिस रूप से उसका सम्बन्ध वाक्य के किसी दूसरे शब्द के साथ प्रकाशित होता है, उसे क्या कहते हैं?
(a) विकृत अव्यय
(b) कारक
(c) सम्बन्धसूचक
(d) क्रियाविशेषण
Ans.(b)
Sol. सही उत्तर: (b) कारक
• Introduction: व्याकरण की दृष्टि से 'कारक' (Case) वह तत्व है जो वाक्य के पदों को आपस में जोड़कर उन्हें अर्थपूर्ण बनाता है। संज्ञा या सर्वनाम का क्रिया के साथ जो संबंध होता है, उसे कारक कहा जाता है। बिना कारक चिह्नों (विभक्तियों) के वाक्य की संरचना अस्पष्ट और अर्थहीन रह जाती है।

• Information Booster: हिंदी में आठ कारक माने गए हैं: कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान, संबंध, अधिकरण और संबोधन। उदाहरण के लिए, "राम ने रावण को बाण से मारा" वाक्य में 'ने', 'को', और 'से' कारक चिह्न हैं जो राम (संज्ञा) का संबंध क्रिया (मारा) और अन्य पदों से स्पष्ट कर रहे हैं। इन्हें 'परसर्ग' भी कहा जाता है।
• Additional Knowledge: कारकों का सही प्रयोग भाषा की स्पष्टता के लिए अनिवार्य है। संस्कृत में जहाँ विभक्तियाँ शब्दों के साथ जुड़ी होती थीं, वहीं हिंदी में ये स्वतंत्र रूप से (परसर्ग के रूप में) प्रयुक्त होती हैं। संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूपांतर से क्रिया के साथ उसका संबंध जाना जाता है, वही भाषा की व्याकरणिक इकाई 'कारक' कहलाती है।

Q28. निम्नलिखित भाषाओं को विकास के उनके क्रम में व्यवस्थित कीजिये: 1. प्राचीन संस्कृत
2. शौरसेनी
3. लौकिक संस्कृत
4. पश्चिमी हिंदी
विकल्प (Options):
(a) 1, 3, 2, 4
(b) 1, 2, 3, 4
(c) 2, 3, 1, 4
(d) 3, 4, 1, 2
Ans.(a)
Sol. सही उत्तर: (a) 1, 3, 2, 4
व्याख्या:
• प्रस्तावना (Introduction): भारतीय आर्यभाषाओं का इतिहास लगभग 3500 वर्षों का है। इसे अध्ययन की सुविधा के लिए प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक तीन कालखंडों में विभाजित किया गया है।
• नॉलेज बूस्टर (Knowledge Booster):
1. प्राचीन संस्कृत (वैदिक संस्कृत): यह आर्यों की सबसे प्राचीन भाषा है जिसमें वेदों की रचना हुई। इसका समय 1500 ई.पू. से 800 ई.पू. तक माना जाता है।
2. लौकिक संस्कृत: जब वैदिक संस्कृत कठिन होने लगी, तब पाणिनी जैसे व्याकरणचार्यों ने इसे परिष्कृत किया। रामायण और महाभारत इसी भाषा में हैं।
3. शौरसेनी (प्राकृत/अपभ्रंश): मध्यकालीन आर्यभाषा काल में प्राकृत और अपभ्रंश के रूप विकसित हुए। शौरसेनी मथुरा के आसपास के 'शूरसेन' प्रदेश की भाषा थी।
4. पश्चिमी हिंदी: आधुनिक आर्यभाषा काल (1000 ई. के बाद) में शौरसेनी अपभ्रंश से 'पश्चिमी हिंदी' उपभाषा का विकास हुआ, जिससे खड़ी बोली और ब्रजभाषा निकलीं।
• अतिरिक्त जानकारी (Additional Knowledge): भाषा का यह प्रवाह 'कठिनता से सरलता' की ओर बढ़ा है। संस्कृत के तत्सम शब्द अपभ्रंश तक पहुँचते-पहुँचते तद्भव में बदल गए और अंततः आधुनिक हिंदी के आधार बने।

Q29. हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में अपनाने में किन संस्थाओं/आंदोलनों की भूमिका रही? A. हिंदी साहित्य सम्मेलन B.नागरी प्रचारिणी सभा C.संविधान सभा D.काशी नागरी प्रचारिणी आंदोलन
कूट (Options):
(a) केवल A और C
(b) केवल B, C और D
(c) A, B, C और D सभी
(d) केवल C और D
Ans.(c)
Sol. Ans.(c)
Sol.
हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में अपनाने में संस्थाओं/आंदोलनों की भूमिका रही-A, B, C और D सभी A. हिंदी साहित्य सम्मेलन B.नागरी प्रचारिणी सभा C.संविधान सभा D.काशी नागरी प्रचारिणी आंदोलन इन चारों संस्थाओं और आंदोलनों ने हिंदी के राष्ट्रभाषा रूप में स्वीकृति के लिए नींव तैयार की, जनचेतना जगाई और राजनीतिक दबाव बनाया। व्याख्या: हिंदी साहित्य सम्मेलन (स्थापना: 1910, वाराणसी)- उद्देश्य: हिंदी भाषा और साहित्य का प्रचार-प्रसार इस संस्था ने हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाए जाने की मांग को राजनीतिक मंचों तक पहुँचाया। नागरी प्रचारिणी सभा (स्थापना: 1893, काशी)- उद्देश्य: देवनागरी लिपि और हिंदी भाषा का प्रचार सभा ने कई बार

सरकार से देवनागरी और हिंदी को आधिकारिक स्तर पर अपनाने की मांग की। संविधान सभा- स्वतंत्र भारत के संविधान निर्माण के दौरान हिंदी को राजभाषा बनाने की बहस प्रमुख थी। कई सदस्यों ने हिंदी को राष्ट्रभाषा घोषित करने की जोरदार वकालत की। काशी नागरी प्रचारिणी आंदोलन - नागरी प्रचारिणी सभा से जुड़ा यह आंदोलन हिंदी को प्रशासनिक, शैक्षिक और सांस्कृतिक माध्यम बनाने का संगठित प्रयास था।

Q30. संविधान के अनुच्छेद 343 में संघ की राजभाषा के बारे में निम्नलिखित में से कौन-से प्रावधान किए गये हैं? 1. संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी।
2. शासकीय प्रयोजनों के लिये भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप मान्य होगा।
3. राजभाषा के बारे में राष्ट्रपति एक आयोग का गठन करेंगे।
4. उच्च न्यायालय तथा उच्चतम न्यायालय की सम्पूर्ण कार्यवाही अंग्रेज़ी भाषा में ही होगी।
विकल्प (Options):
(a) केवल 1 और 3
(b) केवल 1 और 2
(c) केवल 2, 3 और 4
(d) केवल 1, 2 और 3
Ans.(b)
Sol. सही उत्तर: (b) केवल 1 और 2
व्याख्या:
• प्रस्तावना (Introduction): भारतीय संविधान के भाग 17 में राजभाषा का वर्णन है। अनुच्छेद 343 विशेष रूप से 'संघ की राजभाषा' को परिभाषित करता है।
• नॉलेज बूस्टर (Knowledge Booster):
• प्रावधान 1: अनुच्छेद 343(1) में स्पष्ट लिखा है कि संघ की राजभाषा 'हिंदी' और लिपि 'देवनागरी' होगी।
• प्रावधान 2: इसी अनुच्छेद में स्पष्ट किया गया है कि शासकीय कार्यों के लिए अंकों का रूप 'भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप' (जैसे 1, 2, 3...) होगा, न कि हिंदी अंक (१, २, ३)।
• प्रावधान 3 (गलत क्यों?): राष्ट्रपति द्वारा आयोग के गठन का वर्णन अनुच्छेद 344 में है, 343 में नहीं।
• प्रावधान 4 (गलत क्यों?): न्यायपालिका की भाषा का प्रावधान अनुच्छेद 348 में दिया गया है।
• अतिरिक्त जानकारी (Additional Knowledge): अनुच्छेद 343(2) के तहत यह भी व्यवस्था दी गई थी कि संविधान लागू होने के 15 वर्षों तक (1965 तक) अंग्रेजी का प्रयोग भी आधिकारिक कार्यों के लिए जारी रहेगा।